मुझ में इतनी अक्ल कहाँ...

मुल्ला नसरुद्दीन बेहद मज़ाकिया और हाज़िरजवाब इन्सान थे। सभी उनके दोस्त थे। किन्तु यदि कोई उनसे चालाकी करता तो उसे मुँह की खानी पड़ती।

एक बार मुल्लाजी बाज़ार में टहल रहे थे। एक व्यापारी सड़क के किनारे खड़ा आवाज़ लगा रहा था, "कोई है जो मेरा कीमती काँच का सामान घर तक पहुँचा दे?"

मुल्ला झट से बोले, "मैं सामान पहुँचा दूँगा, पर मज़दूरी क्या दोगे?"

"इसके बदले मैं तुम्हें तीन अनमोल बातें बताऊँगा, जो हमेशा तुम्हारे काम आएँगी।"

"वाह, यह हुआ न सौदा। पैसा तो हमेशा पास रहता नहीं और अक्ल को तो कोई चुरा नहीं सकता।" यह सोचकर मुल्ला जी ने भारी थैला सिर पर लादा और चल दिए व्यापारी के पीछे। अभी कुछ ही दूर गए थे कि व्यापारी ने कहा, "अजनबी व्यक्ति पर कभी विश्वास मत करना।"

"भला यह क्या अनमोल बात हुई? हर कोई जानता है यह बात।" मुल्ला ने सोचा और चुपचाप चलता रहा। व्यापारी फिर बोला, "दूसरी बात, कभी किसी को पैसा उधार मत देना।"

"हद हो गई।" मुल्ला ने सोचा. फिर भी वे चलते रहे।

व्यापारी का घर आ गया। दरवाज़े के अन्दर घुसते ही उसने कहा, "घर से निकलते समय दरवाज़े पर ताला लगाना कभी न भूलना।" अब मुल्ला से चुप न रहा गया, "भला ये कोई अनमोल बातें हुईं? इन्हें तो सभी जानते हैं।"

"भाई, तुम्हारी सूरत से अक्ल का अन्दाज़ा लगाकर ही मैंने ये बातें बताई हैं। अच्छा चलो, यह थैला वहाँ खिड़की के पास सम्भालकर रख दो।" मुल्ला गए और थैला उठाकर खिड़की के बाहर फेंक दिया। व्यापारी हक्का-बक्का रह गया।

"यह क्या कर दिया मूर्ख। मेरा कीमती काँच का सामान बरबाद कर दिया।" व्यापारी चिल्लाते हुए बोला। मुल्ला ने भोली सूरत से कहा, "आप ही ने तो कहा था खिड़की के पास रख दो। यह कहाँ बताया कि अन्दर या बाहर। वैसे भी मुझ में इतनी अक्ल कहाँ...?" चमक